Toppersnotes
Unleash the topper in you

CGPSC

State Civil Services

Chhattisgarh Public Service Commission

(Preliminary & Main)

भाग – 5

भारत एवं छत्तीसगढ़ भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

CGPSC

CONTENTS

भारत का भूगोल

1.	भारत का भूगोल	1
2.	भारत का भौगोलिक परिचय	3
3.	भारत के भौतिक प्रदेश	8
4.	भारत की जलवायु	32
5.	भारत का अपवाह तंत्र	45
6.	भारत की मृदा	59
7.	भारत की वनस्पति	66
8.	प्राकृतिक आपदा	73
9.	जैव विविधता	84
10.	अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन और संधियाँ	102
11.	भारत में पारिस्थितिकी संबंधित कानून	112
12.	जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण	118
13.	भारत की कृषि	136
14.	भारत की प्रमुख फसलें	138
15.	भारत में सिंचाई	147
16.	बहुउद्देशीय परियोजनाएँ	151
17.	हरित क्रांति	158
18.	भारत के खनिज	162
19.	भारत के ऊर्जा संसाधन	166
20.	भारत के उद्योग	172
21.	परिवहन	179
22.	भारत की जनसंख्या एवं साक्षरता	188
23.	मानव विशेषताएँ	197
24.	शहरीकरण	205

छत्तीसगढ़ का भूगोल

1.	छत्तीसगढ़ की भौतिक विशेषताएँ	212
2.	छत्तीसगढ़ की मृदा	214
3.	छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियाँ	218
4.	छत्तीसगढ़ में वन संपदा	222
5.	छत्तीसगढ़ की जनसांख्यिकी	228
6.	कृषि	240
7.	पशुधन विकास	254
8.	छत्तीसगढ़ में सिंचाई परियोजनाएँ	266
9.	खनिज संसाधन	268
10.	ऊर्जा संसाधन छत्तीसगढ़	272
11.	छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन स्थल	276
12.	परिवहन	281
13.	छत्तीसगढ़ की प्रमुख सरकारी योजना	284
14.	उद्योग	295

भारत का भूगोल

- एशिया महाद्वीप का दक्षिण का महत्वपूर्ण भाग जिसे भारतीय उपमहाद्वीप कहा जाता है।
- भारत का अभिप्राय आन्तरिक प्रकाश से माना जाता है। भारत वर्ष नाम का उल्लेख श्रीमद भगवत पुराण के 5वें स्कन्द में तथा ''वायु पुराण'' मे प्राप्त होता है।
- भारत वर्ष को जम्बू द्वीप, हिम वर्ष, हिमवन्त वर्ष, अजनाभ वर्ष, नाभि वर्ष आदि नामों से भी जाना जाता है।
- प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार 'वर्ष' का अभिप्राय ''दीप'' से है जो कि 2 ओर जलीय क्षेत्र और 2 ओर से स्थल क्षेत्र से जुड़ा हुआ है।

'' भारत वर्ष '' नाम की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के अनुसार 2 रुपो मे मानी जाती है।

1. प्रजापति ब्रह्मा के मानस पुत्र मनु के वंशज भारत के नाम पर
2. काक्षिदास रचित ''अभिज्ञान शकुन्तलम'' ''ग्रन्थ के अनुसार राजा दुष्यन्त व शकुन्तलता के पुत्र राजा भरत के नाम पर

- फारस साम्राज्य ६ ईरान के सम्राट ''डेरियस '' द्वारा भारत वर्ष के सिंधु नंदी के क्षेत्र पर आक्रमण करने के पश्चात इस क्षेत्र को ''हिन्दुस्तान'' कहा गया ।
- क्योंकि फारसी भाषा में ''स'' का उच्चारण 'है' के रूप में होता है।
- पाश्चात्य आक्रमण के दौरान इस नाम का (सिन्धु/हिन्दु) का अपभ्रंश होते हुए इन्डस व इडिया हो गया)
- भारतीय उपमहाद्वीप जो कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भारत, भूटान से सम्बन्धित माना जाता है 'का सबसे विकसित राष्ट्र भारत है कि राजनीतिक उत्पत्ति 15 अगस्त 1947 को हुई ।
- भारत का राजनीतिक उदय 15 AUG 1947 को हुआ
- माउण् बेटन योजना के तहत द्विराष्ट्र सिद्धान्त के आधार पर 14 अगस्त 1947 को मुस्लिम राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान, को मान्यता मिली जबकि गैर मुस्लिम धर्म निरपेक्ष राज्य भारत की स्थापना हुई ।
- 1945 मे ब्रिटेन के आम चुनाव मे लेबर पार्टी के एटली के प्रधानमंत्री बनते ही ब्रिटिश संसद में जून 1948 तक भारत को आजाद करने की घोषणा की गई ।
- 15 श्रनसल 1947 भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम'' ब्रिटिश संसद में पारित हुआ जिसके अनुसार
- 1 माह के भीतर भारत को आजाद करने का निर्णय हुआ। इसके साथ ही पण्डित नेहरू के नेतृत्व मे कार्य रही अंतरिम सरकार को स्वतन्त्र भारत की सरकार मान लिया गया ।
- अन्ततः 26 जनवरी 1950 को भारत गणतन्त्र ध्जनतन्त्र के रूप में स्थापित हो गया ।
- मार्च 1947 को माउण्ट बेंटन के भारत के वायसराय बनने से पूर्व लार्ड वेवेल ने भारत–पाकिस्तान के मध्य एक कच्ची सीमा निर्धारित की।
- माउण्ट बैटन ने जून 1947 में मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों को पाकिस्तानी राष्ट्र के रूप में चिन्हित करने के लिए सर सिरिल रेडक्लिफ के नेतृत्व में 2 आयोग गठित किये। जिन दोनों के अध्यक्ष रेडक्लिफ को ही बनाया।
- मेडक्लिफ महोदय ने कुछ हफ्तो मे ही. पूर्वी पाकिस्तान तथा पश्चिमी पाकिस्तान कि भारत के साथ सीमा निर्धारित कर दी और इस प्रकार 17 अगस्त 1947 को भारत – पाकिस्तान के मध्य रेडक्लिफ सीमा निर्धारित हो गई।
- इस सीमा निर्धारण में बहुत सी कमीयाँ व्याप्त रही । जिसका खामियाजा वर्तमान में भी भारत–पाक भुगत रहे हैं,
- पजाब क्षेत्र में फिरोजपुर, गुरदासपुर व बंगाल क्षेत्र में मुर्शिदाबाद, मालदा, चटगांव ऐसे प्रमुख इलाके थे जो घोर विवादित रहे।

- स्वतंत्रता पश्चात भारतीय राज्यों के एकीकरण की जिम्मेदारी प्रथम गृहमन्त्री व उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल को दी गई, परन्तु कश्मीर का मसला स्वयं पण्डित नेहरू ने अपने पास रखा
- भारत व चीन के मध्य सीमाओं का निर्धारण वर्तमान तक भी नही हो पाया है क्योंकि भारत के द्वारा मानी जाने वाली रेखा मेक मोहन रेखा को चीन अस्वीकार करता है।
- 1860 व 1890 के दशक में निर्धारित की गई जॉनसन रेखा व मेक्डॉनल्ड रेखा को चीन मुख्य आधार बनाना चाहता है।
- मेकमोहन रेखा को स्वीकार करने ''से'' अरुणाचल प्रदेश ,सिक्किम भारतीय राज्य बन जाते हैं। जबकि चीन इसे अपना प्रशासनिक क्षेत्र मानता है यही स्थिती लेह–लडाख की है।
- इसी कारण चीनी सेनाओं द्वारा लेह–लदोख, अरुणाचल/क्षेत्रो मे अवैध घुसपैठ/अतिक्रमण किये जाते हैं।

भारत का भौगोलिक परिचय

भारत का निर्देशांकीय विस्तार

अक्षांशीय विस्तार :– भारत की मुख्य भूमि का विस्तार 8° 4′ उत्तरी अक्षांश से 37° 6′ उत्तरी अक्षांश के मध्य है, जो कि उत्तर में इन्दिरा कॉल ;मिनटेक दर्रे के समीप) से दक्षिण मे कन्याकुमारी तक फैला है 110 जिसकी कुल लम्बाई 3214 कि.मी. है। (1997 मील) जबकि भारत का वास्तविक दक्षिणतम बिन्दु 6° 42′ पर है जिसे इन्दिरा प्वाइंट के नाम से जाना जाता है, इसके अन्य नाम पार्सन पाइन्ट, नाहिचिंग विगमेलियन, ला हिंचिंग पाइन्ट भी है।

देशान्तरीय विस्तार

- भारत का देशान्तरीय विस्तार $68^0 7'$ पूर्वी देशान्तर 97° 25′ पूर्वी देशान्तर है ।
- यह पश्चिम में राजहरा क्रीक (गुजरात) से पूर्व मे वांग (अरुणाचल प्रदेश) तक विस्तृत है।
- यह देशान्तरीय विस्तार 2933 कि.मी. या 1822 मील है
- भारत का 'अक्षांशीय व देशान्तरीय विस्तार का अन्तराल 1 लाख 29° है।
- परन्तु उत्तर से दक्षिण के विस्तार की लम्बाई पूर्व से पश्चिम के विस्तार से अधिक पायी जाती है) क्योंकि देशान्तर रेखाओं के मध्य की यूरी निम्न 30 अक्षांशो से उच्च अक्षांशों की ओर निरन्तर घटती जाती है जबकि अक्षांश रेखाओ की दूरी सम्पूर्ण ग्लोब पर एक समान रहती है।
- भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32.87 लाख वर्ग किमी (3287263) विश्व के क्षेत्रफल का 2.4% (3.29 मिलियन वर्ग कि.मी.)
- भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से 7 वाँ स्थान है।
  1. रूस
  2. कनाडा
  3. चीन
  4. USA
  5. ब्राजील
  6. आस्ट्रेलिया
  7. भारत
  8. अर्जेण्टीना
  9. कजाकिस्तान (सोवियत रूस से पृथक होने वाले राष्ट्रो मे सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला देश)
  10. अल्जीरिया

जनसंख्या के अनुसार भारत विश्व में 2 स्थान है।

1. चीन
2. भारत
3. USA
4. इण्डोनेशिया
5. ब्राजील
6. पाकिस्तान
7. नाइजीरिया
8. बांग्लादेश
9. रूस
10. जापान

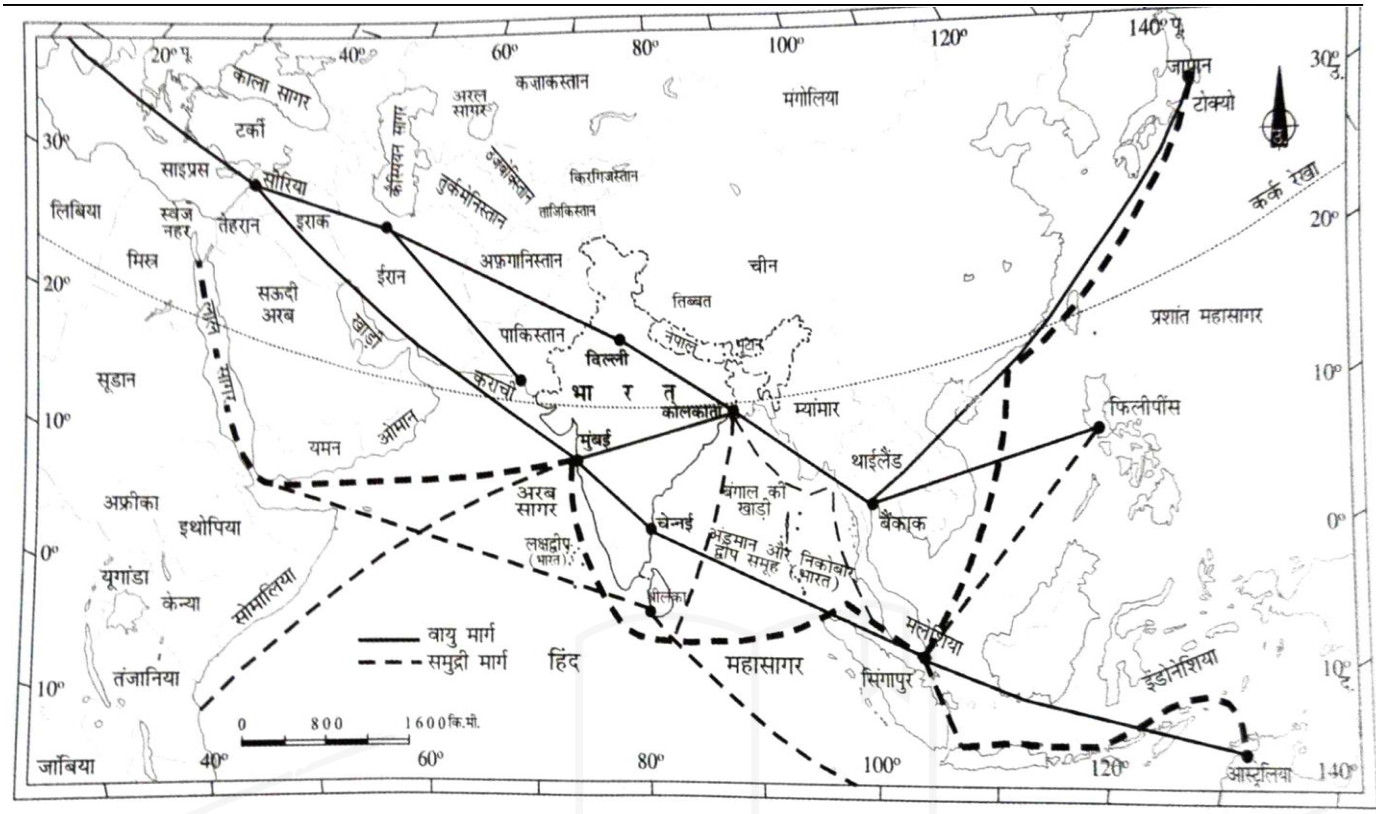

चित्र 1.2 : पूर्वी जगत् में भारत की स्थिति

भारत की कुल स्थल सीमा 15106.7 कि.मी. है जो कि 7 देशों में मिलती है।
विश्व का वह देश जो कि सर्वाधिक देशों मे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रखता है – चीन (13)

भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा क्रमशः

1. बांग्लादेश (4096.7 कि.मी.)

- 7 मई 2015 में भारत व बांग्लादेश ने कुछ क्षेत्रों कि अदला बदली की है। जिसके तहत भारत द्वारा बांग्लादेश को 2777.7 कि.मी.^{2} क्षेत्र दिया गया। जबकि भारत को 10 बांग्लादेश से 2267.6 कि.मी.^{2} क्षेत्र प्राप्त हुआ । भारत की बांग्लादेश के साथ कुल 5 राज्यों की सीमा लगती है। (प. बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम)
- भारत व बांग्लादेश के मध्य शून्य अन्तर्राष्ट्रीय रेखा (जीरो लाइन) त्रिपुरा की राजधानी अगरतला के समीप मकानों व खेतो के मध्य से गुजरने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा
- मिजोरम म्यामार व बांग्लादेश दोनो देशों से अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रखता है।
- पश्चिमी बंगाल, बांग्लादेश के साथ सर्वाधिक लम्बी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रखता है।
- त्रिपुरा बांग्लादेश से 3 ओर से घिरा है।
- असम राज्य की सीमा बांग्लादेश से 2 पृथक स्थानों पर मिलती है।

2. चीन (3488 कि.मी.)

- इसके साथ भारत के 5 राज्य जुड़े हैं।
- सर्वाधिक लम्बी सीमा रेखा जम्मू कश्मीर से

- 1912–1913 के शिमला समझौते के अनुसार मेकमोहन रेखा भारत चीन के मध्य स्वीकृत की गई जिसे चीन अस्वीकार करता है।
- विवाद– तवांग घाटी,(अरुणाचल प्रदेश) अक्साई चीन ,जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम।

3. पाकिस्तान (3323 किमी)

- ''सर्वाधिक लम्बी राजस्थान (1070 किमी)
- जम्मू कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात से सीमा भी हुई है

4. नेपाल (175) किमी)

- सर्वाधिक लम्बी सीमा उत्तरप्रदेश के साथ उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, प. बंगाल, सिक्किम से सीमा लगी हुई है।

5. म्यांमार/ बर्मा (1643 किमी.)

- सर्वा. लम्बी सीमा अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम के साथ सीमा ।

6. भूटान(699 कि.पी.)

- सर्वाधिक लम्बी असम के साथ सिक्किम, पष्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा लगी हुई है।

7. अफगानिस्तान

- 12 नवंबर 1893 मे ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधि भर मारियर डुरण्ड और अफगान सरदार अब्दुल रहमान खान के मध्य 100 वर्ष के लिए डूण्ड रेखा निर्धारित की गई।
- जो कि वर्तमान में मुख्यतया पाकिस्तान व अफगानिस्तान के मध्य है जबकि 106 कि.मी. भारत (पाक अधिकृत कश्मीर) POK व अफगानिस्तान के मध्य है।
- हाल ही में वर्ष 2012 के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के द्वारा जिक्र किये जाने के कारण यह पुनः चर्चा में आ गया क्योंकि 1993 मे समझौते की अवधि समाप्त हो गई। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर डुण्रड लाइन अफगानिस्तान व पाकिस्तान के मध्य मानी जाती हैं।
- भारत की जलीय सीमा 7516.7 कि.मी. मानी गई है इसमें से भारत कि तटीय भूमि की मुख्य तटीय सीमा नवीनतम आंकड़ों के अनुसार 5422.6 कि.मी मानी गई है। (भारतीय संसद में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार)
- इसके अन्तर्गत 7राज्य 4 केन्द्रशासित प्रदेश की 4 तटीय सीमा शामिल है।

भारतीय जलीय सीमा क्रमशः

- गुजरात (1214.7 कि.मी.)
- आंध्र प्रदेश 9737 कि.मी.
- तमिलनाडु
- महाराश्ट्र
- केरल
- उड़ीसा

- कर्नाटक
- पं. बंगाल
- गोवा (सबसे कम तटीय रेखा वाला राज्य)

4 केन्द्रशासित प्रदेशों में

1. अण्डमान निकोबार (1962 कि.मी.) (भारत में सर्वा तटीय सीमा वाला क्षेत्र)
2. पुदुचेरी
3. लक्षद्वीप
4. दमन दीव

पुदुचेरी

- वर्ष 2006 सितम्बर में पाण्डिचेरी से नाम परिवर्तित करके पुदुचेरी किया गया
- इसके अन्तर्गत 4 जिले शामिल है जो कि 3 राज्यो के मध्य है।
  1. आहे – केरल
  2. यनम – आंध्रप्रदेश
  3. कराईकल व पुदुचेरी – तमिलनाडु
- भारत के तटीय भाग की आधार रेखा से 12 समुद्री मील तक की दूरी का क्षेत्र भारत की प्रादेशिक समुद्री सीमा (मेरीटाइम बेल्ट) मानी जाती है।

आधार रेखा

- किसी राज्य के स्थल के शीर्षो को मिलाने वाली रेखा बेस लाइन या आधार रेखा कहलाती है। आधार रेखा से तटीय क्षेत्र का भाग आन्तरिक सागर / इन्टर्नल सी कहलाता है।
- आधार रेखा से 24 समुद्री मील / नॉटिकल मील
- सागरीय भाग को अर्थात मेरीटाइम बेल्ट के आगे 12 समुद्री मील के क्षेत्र को अविच्छिन्न मण्डल / कान्टीन्यूस जोन कहा जाता है।
- अरब सागर / बंगाल की खाड़ी में भारत का अविच्छिन्न मंडल विस्तृत है।
- 1 समुद्री मील / नॉटिकल मील :– 1852 मीटर / 1.852 किमी./ 2025 यार्ड
- भारत की SEZ (स्पेशल इकानामी जोन) विशिष्ट आर्थिक मण्डल, आधार रेखा से 200 समुद्री मील तक विस्तृत है। भारत के कुल 69 जिले जलीय सीमा से सम्बन्धित है
- विशिष्ट आर्थिक मण्डल में सम्बन्धित देश द्वारा संसाधनो का दोहन किया जाता है।
- 23.5^0 उत्तरी अक्षांश या कर्क रेखा भारत के मध्य से गुजरती हैं जो कि 8 राज्यों में है।

पश्चिम से पूर्व

1. गुजरात
2. राजस्थान ; बांसावाड़ा व डूंगरपूर द्ध
3. मध्य प्रदेश(भोपाल)
4. छतीसगढ़
5. झारखंड
6. प. बंगाल
7. त्रिपुरा
8. मिजोरम

- भारत का मानक समय इलाहबाद नैनी के समीप से गुजरता है जो कि 82ण्5 पूर्वी देशान्तर का स्वीकार किया गया है जो कि भारत के 15 राज्यों से गुजरता है।
- उत्तरप्रदेश मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ – उडीसा आंध्र प्रदेश
- किसी भी देश का मानक समय उस देश के मध्यवर्ती भाग समय होता है से गुजरने वाली देशान्तर रेखा का समय होता है ।
- परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्डो के अनुसार निश्चित देशान्तर रेखा को मानक समय के रूप में चुना जाता है।

पाक स्ट्रेट : भारत व श्रीलंका को पृथक करने वाली जल सन्धि पाक जल डमक / पाक स्ट्रेट है ।

ग्राण्ड चैनल : यह जल सन्धि भारत – इण्डोनेशिया को अर्थात अण्डमान निकोबार व सुमात्रा (इण्डोनेशिया) को पृथक करती है।

मलम्का स्ट्रेटः मलाया पेनुसुला / मलाया प्रायद्वीप व सुमात्रा (इण्डोनेशिया) को पृथक करने वाली जल संधि है।

सुडा स्टेट – जावा व सुमात्रा को पृथ्क करने वाली जलसंधि

भारत के भौतिक प्रदेश

- भारत का कुल क्षेत्रफल 32.87 वर्ग कि.मी. है। जो कि सम्पूर्ण पृथ्वी का 0.54% है, जो तथा स्थलभाग 2.54% माना जाता है।
- इसके अन्तर्गत प्रमुख भू–आकृतियों के अंश निम्न प्रकार से है।
  1. पर्वतीय क्षेत्र (10.6%) एवं पहाड़ियाँ – 29.1%
  2. पठारी क्षेत्र – 27.7%
  3. मैदानी प्रदेश– 43.2%
- S.P चटर्जी नामक प्रमुख भूगोलवेत्ता द्वारा भारत के भौतिक स्वरूप का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया गये उसे 1964 मे भारत सरकार के राजपत्र/गजेटियर ऑफ इण्डिया मे प्रकाशित किया गया।
- इस वर्गीकरण के तहत भारत के 4 भौतिक प्रदेश माने गये ।
- आगे चलकर भू–विज्ञानियों ने भारत के कुल 4 भौतिक विभाग माने गये –
  1. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
  2. भारत का विशाल मैदान
  3. प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश
  4. द्वीपीय क्षेत्र

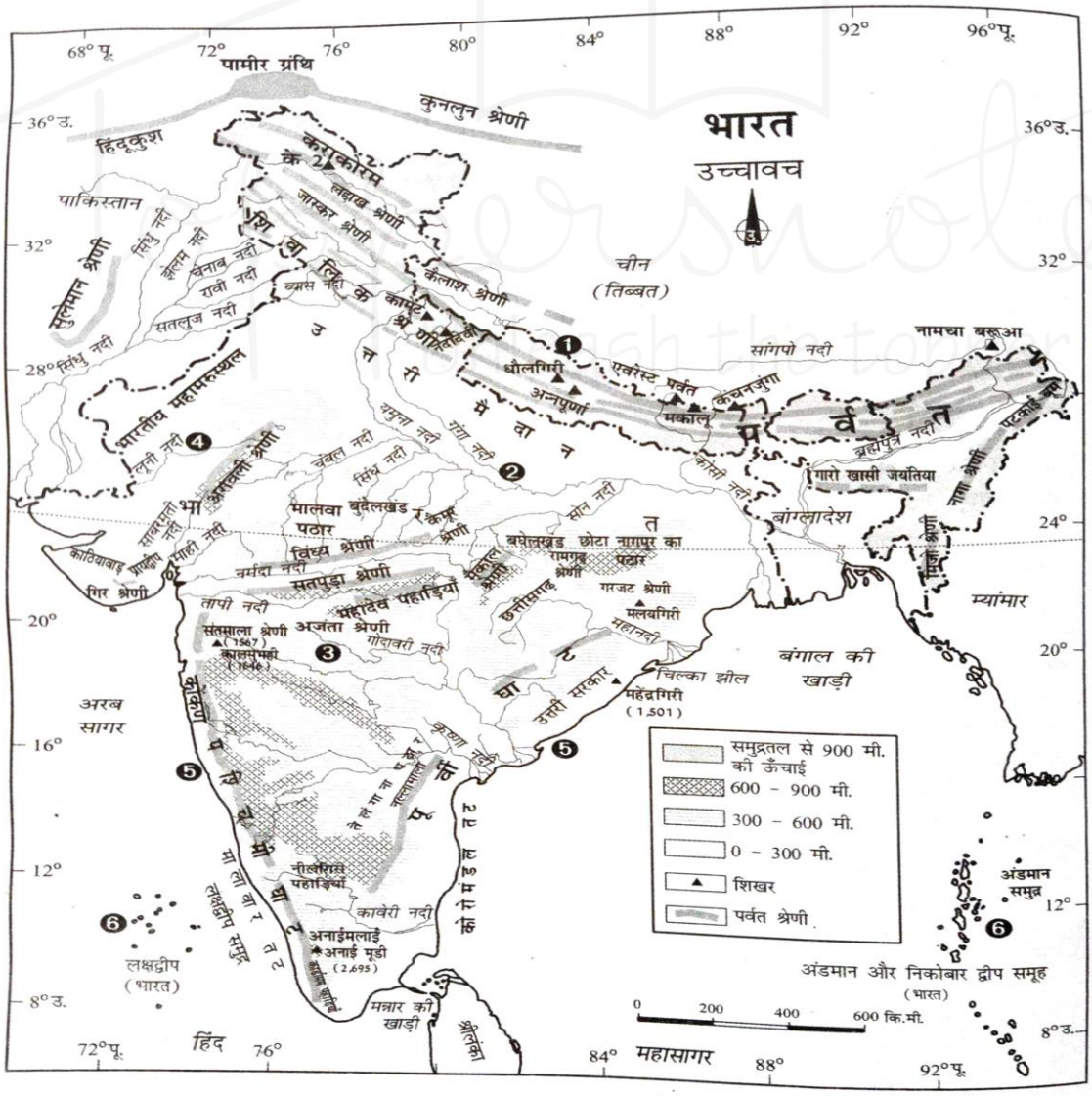

चित्र 2.2 : भारत : भौतिक

उत्तरी पर्वतीय प्रदेश

- भारत का उत्तरी पर्वतीय प्रदेश चापाकार रुप में पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर भारतीय महाद्वीप के उत्तर में स्थित है।
- भारतीय क्षेत्र मे इसका विस्तार 2500 झड का माना जाता है।
- जबकि यह अफगानिस्तान, पाक, बर्मा तक फैला हुआ है। भारत, नेपाल, भूटान, व बर्मा तक फैला हुआ है।
- हिमालयी पर्वत श्रृंखला प्राचीन चटटानों से लेकर नवयुग (नियोजोइक) की चट्टानों से निर्मित मानी जाती है इसे नवीन वलित पर्वतमाला कहते है क्योंकि यह नवीनतम पर्वत युग अर्थात अल्पाईन पर्वत तन्त्र या अल्पाईन पर्वत युग से सम्बन्धित है।
- हिमालय पर्वतमाला के पश्चिमी व पूर्वी किनारे पर अक्षसंघीय मोड पाया जाता है जिसके कारण उन भागो मे हिमालय का उत्तर से दक्षिण प्रसार भी होता है।

हिमालय की उत्पत्ति / निर्माण सेनोजोइक / काल

इस काल मे हिमालय का 3 उत्थान माना जाते है –

1. इयोसिन काल में
2. मायोसिन काल में
3. प्लायोसिन काल में

पृथ्वी इतिहास में 4 पर्वत शुभ माने जाते हैं इन्हें पर्वत तन्त्र भी कहा जाता है –

1. प्री केम्ब्रियन
2. केलिडोनियन
3. हर्सिमियन
4. अल्पाइन :– आल्पस ,एण्डीज, रॉकीज पर्वत कि उत्पत्ति

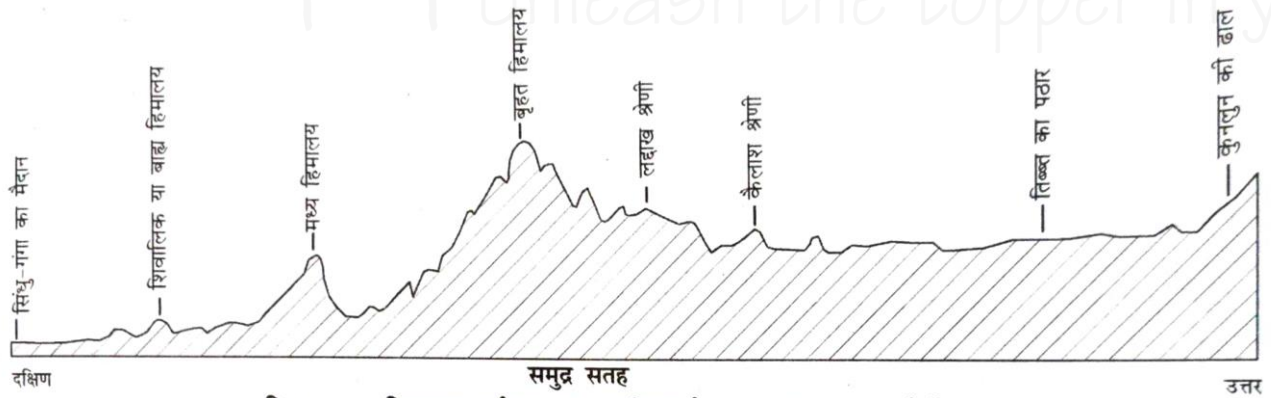

चित्र 2.6 : हिमालय पर्वत समूह : दक्षिण से उत्तर तक का पार्श्व चित्र

हिमालय की उत्पत्ति

हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं की विशेषताओं के आधार पर वैज्ञानिकों ने इसे हिमालय, मुख्य हिमालय व लघु हिमालय की उत्पत्ति को एक ही प्रकार के सिद्धान्तों से माना है जबकि शिवालिक/उप हिमालय की उत्पत्ति की व्याख्या अलग मत से की जाती है।

शेष हिमालय की उत्पत्ति (शिवालिक के अलावा) की उत्पत्ति

1. भू––सन्नति सिद्धान्त : (जिओसिकलाइन थ्योरी)

- टेथिस भू–सन्नति को आधार मानकर इसके उत्तर स्थित यूरेपियन खण्ड तथा दक्षिण में स्थित प्रायद्वीपीय भारतीय खण्ड के क्षैतिजीय अभिसरण से हिमालय की उत्पत्ति की व्याख्या प्रस्तुत की।
- इस मत के अनुसार इन दोनो स्थल खण्डों के मध्य टेथिस भू–सन्नति मे बने अवसादी चटटानो पर क्षैतिजीय अभिसरण व क्षेतिजीय संपीडन के कारण हिमालयी पर्वत श्रेणियों का निर्माण हुआ ।
- इस आधार पर सीमान्त पर्वत श्रेणियों (माउण्टेन पर्वत रेंज, रेण्ड केटन) के रूप में हिमालय व क्युनलुन पर्वत श्रेणियों का निर्माण हुआ, इनके मध्य में मध्य पिण्ड (मीडियन मास) का निर्माण हुआ जिसे कोबर ने स्वाशिनबर्ग कहा।
- यह मध्य पिण्ड तिब्बत के पठार के रूप में बना इसी भू–सन्नति सिद्धांत के आधार पर टेथिस
- भू सन्नति में आल्पस, दिनारिक, कापो थियन, जैग्रोस, पॉण्टिक, एल्बुज पर्वत श्रेणियों की सीमान्त पर्वत श्रेणिंयों के रूप में निर्मित माना जाता है।
- भू–सन्नति सिद्धान्त के आधार पर यह प्रमाणित किया गया कि यूरेशियन खण्ड के किनारे पर क्यूनलून सीमान्त श्रेणी तथा भारतीय प्रायद्वीपीय खण्ड की ओर हिमालयी पर्वत श्रेणी का निर्माण जिनके मध्य तिब्बत का पठार स्थित है।
- इस प्रक्रिया के दौरान हिमालयी पर्वत श्रेणी के दक्षिण की और एक अग्रगर्त/फोर डीप निर्मित हुआ जिसमे अवसादन से भारत का विशाल मैदान बना।
- इस– भू सन्नति के सिद्धान्त में 3 विद्वानों के मत दृश्य होते हैं।

एडवर्ड स्वेस महोदय के अनुसार

आस्ट्रिया के भू–आकृति वैज्ञानिक स्वेस के अनुसार टेथिस भू सन्नति में पर्वत निर्माण की व्याख्या के दौरान यह माना गया कि अंगारालेण्ड की यूरेशियन खण्ड दक्षिण की ओर संचालित होता है जबकि प्रायद्वीपीय भारत का खण्ड अपेक्षाकृत स्थिर होता है।

ऑरगोण्ड का मत

इनके अनुसार प्रायद्वीपीय खण्ड का उत्तर की ओर संचलन हुआ जबकि यूरेशियन खण्ड अपेक्षाकृत स्थिर रहा है।

कोबर का मत

- जर्मन भू–आकृति वैज्ञानिक कोबर के अनुसार यूरेशियन खण्ड व प्रायद्वीपीय भारतीय खण्ड दोनो में संचलन की प्रवृत्ति रही है जो कि क्रमशः दक्षिण व उत्तर की ओर क्षेतिजीय अभिसरण के रूप में मानी जाती हैं।
- अन्य पर्वत निर्माणक सिद्धान्तों की व्याख्या करने वाले विद्वानों की अपेक्षा कोबर महोदय के अनुसार भू–सन्नतियाँ चोडी, लम्बी, उथली सागरीय राशि के रूप में मानी जाती है।
- कोबर के अनुसार पृथ्वी इतिहास मे 6 पर्वतयुग रहे है।

2. प्लेटटेक्टोनिकी सिद्धान्त

- 1960–1961 में हेरी हेस व राबर्ट डिज के द्वारा प्लेट विर्वतनिकी सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया।
- इस सिद्धान्त के अनुसार प्लेटो के किनारों विभिन्न प्रकार की स्थलाकृतियों का निर्माण होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार अभिसरण किनारों पर हिमालयी पर्वतमालाओं का निर्माण हुआ है।
- यूरेशियन प्लेट तथा अपेक्षाकृत भारतीय प्रायद्वीप प्लेट जो कि इण्डो– आस्ट्रेलिया प्लेट का भाग है के परस्पर अभिसरण से मध्यवर्ती सागर मे, क्रमिक रूप से हिमालयी पर्वत श्रेणियाँ निर्मित हुई।

छत्तीसगढ़ का भूगोल

छत्तीसगढ की भौतिक विताएँ

छत्तीसगढ देश का नवगणित 26 वाँ राज्य है जो नवम्बर, 2000 को अस्तित्व में आया। जनगणना 2001 के समय राज्य में जिलों की संख्या 16 थी, जो 2007 में बढकर 18 हो गयी। वर्तमान में जिलों 27 हो गई है।

स्थिति एवं विस्तार – छत्तीसगढ एशिया महाद्वीप एशिया महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में भारत के उत्तरी प्रायद्वीप में अवस्थित है। छत्तीसगढ की भौगोलिक अवस्थित 17°46 से 24°5 उत्तरी अक्षांष के मध्य तथा 80°15 से 84°20 अन्य स्त्रोत में 84°24 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यहाँ से होकर कर्क रेखाउत्तरी अक्षांश तथा भारतीय मानक समय पूर्वी देशांतर रेखाएँ गुजरती है, जो कि सूरजपुर (अन्य स्त्रोत में कोरिया) जिले में एक–दूसरे को काटती है।

छत्तीसगढ का कुल क्षेत्रफल लगभग 1,35,192 वर्ग किमी है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 4.11% है। राज्य के उत्तर से दक्षिण तक लंम्बाई 700 किमी तथा पश्चिम से पूर्व की लंबाई 435 किमी है। छत्तीसगढ के उत्तर–पश्चिम में मध्यप्रदेश, दक्षिण पश्चिम में महाराष्ट्र, दक्षिण में तेलगांना तथा आंध्र प्रदेश, पूर्व में ओडिशा, उत्तर–पूर्व में झारखंड तथा उत्तर में उत्तर प्रदेश स्थित है।

अंक्षाशीय स्थिति

17°46 उत्तरी अक्षांष से 24°5 उत्तरी अक्षांश के मध्य

- अक्षांशीय लंबाई अर्थात् उत्तर–दक्षिण की लंबाई 700किमी।
- 23° उत्तरी अक्षांष (कर्क रेखा) राज्य के उत्तरी जिलों–कोरिया, सूरजपुर और बलरामपुर से गुजरती है।

देशांतरीय स्थिति

80°15 पूर्वी देषांतर से 84°20 पूर्वी देषांतर के मध्य–

- देषांतरीय लंबाई अर्थात् पूर्व–पश्चिम लंबाई 435 किमी।
- 82°पूर्वी देशांतर अर्थात् भारतीय मानक समय रेखा छत्तीसगढ के 7 जिलों से गुजरती है। (सूरजपुर, कोरिया, कोरबा, जांजगीर–चांपा, बलौदा बाजार, महासमुद, गरियाबंद)

छत्तीसगढ की अवस्थिति एवं विस्तार का प्रभाव

- छत्तीसगढ एक भू–आवेश्ठित राज्य है, जिसका किसी भी देष के साथ सीमा नहीं लगती है । यह बाह्य आक्रमण से सुरक्षित प्रदेश है।
- भारत का मानक समय रेखा राज्य के 7 जिलों से होकर गुजरती है। छत्तीसगढ में भारत के मानक समय रेखा और जलवायविक समय में कोई अंतर नहीं है ।
- छत्तीसगढ के तीन हिस्सों से कर्क रेखा गुजरती है इसलिये यहाँ की जलवायु उश्णकटिबंधीय है ।

पाट प्रदेश

यह राज्य के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में स्थित है पाट पठारी स्थलाकृतियों में स्थित एक ऊँचा मैदान है। पाट अपने शीर्ष में सपाट और पार्ष्व में सदृश्य तीव्र ढालदार होता है। इसका विस्तार अम्बिकापुर, सीतापुर तथा लुण्ड्रा तहसील तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 6204वर्ग किमी है, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 4.59 प्रतिशत है। यहाँ मुख्य रूप से लाल–पीली मिट्टी तथा लाल दोमट मिट्टी पाई जाती है जिसमें धान, गेहूँ, चना, तुवर, सरसों इत्यादि फसलों का उत्पादन होता है। यहाँ की जलवायु षुश्क एवं पर्णपाती है। बॉक्साइट इस क्षेत्र का प्रमुख खनिज है। इसके उपविभाग निम्न है।

1. **मैनपाटः**– यह दक्षिणी सीतापुर एवं दक्षिणी सरगुजा तक विस्तृत है । इस क्षेत्र से मांड नदी का उद्‌गम हुआ है। इस क्षेत्र को छत्तीसगढ का षिमला, तिब्बतियों का शरणार्थी स्थल एवं ठंडा प्रदेश कहा जाता है।
2. **जारंगपाटः**– यह उत्तरी सीतापुर और पूर्वी सरगुजा तहसील तक विस्तृत है।
3. **सामरीपाटः**– इसका विस्तार पूर्वी सरगुजा, सामरी (कुसमी) तहसील तक है। गौरलाटा राज्य की सबसे ऊँची चोटी वहीं स्थित है । जिसकी ऊँचाई 1225मीटर है। यह प्रदेश का सबसे ऊँचा पाट प्रदेश भी है।
4. **जमीरपाटः**– यह बलरामपुर जिलें में स्थित है। इसे बॉक्साइट का मैदान भी कहा जाता है।
5. **लहसुन पाटः**– यह भी बलरामपुर जिला में स्थित है। यह सामरीपाट का पश्चिम भाग है।
6. **जशपुर पाटः**– यह जषपुर जिले में स्थित है जो राज्य का सबसे बडा व लंबा पाट प्रदेश है।
7. **पेण्ड्रापाटः–** जषपुर जिले में स्थित है। यहाँ से ईब, व कन्हार नदी का उद्‌गम होता है।
8. **जशपुरः–** सामरी पाट या कुसमी पाट – जशपुर–सामरी पाट प्रदेश की उत्तरी सीमा जिसमें संपूर्ण (कुसुमी) तहसील तथा जषपुर तहसील सम्मिलित है । यहाँ की जलवायु ऊष्णकटिबंधीय है।

यह क्षेत्र छोटा नागपुर पठार का हिस्सा है। यहाँ से तीन नदियाँ (ईब, शंख, कन्हार) का बहाव होता है। मांद नदी का उद्‌गम मैनपाट से हुआ है। जिसका बहाव उत्तर से दक्षिण तथा ईब नदी का उद्‌गम पेण्ड्रापाट से हुआ है। इसका बहाव दक्षिण से पूर्व की ओर है। इन नदियों के बहाव के कारण यह क्षेत्र अधिक उपजाऊ है इस क्षेत्र में शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते है जो पाट प्रदेश के 38% भाग में है। यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मैनपाट को 'छत्तीसगढ का शिमला' कहा जाता है। छत्तीसगढ ने इन चार भागों से जाना जा सकता है कि स्थलाकृति, वनस्पति, फसल, खनिज इत्यादि से राज्य का स्थान देश से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

राष्ट्रीय उद्यान

गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान

यह राज्य का सबसे बडा राष्ट्रीय उद्यान है। इसकी स्थापना 1981 में की गई थी। इसका पुराना नाम संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान था, परंतु राज्य गठन के बाद इसका नाम 'गुरू घासीदास राष्ट्रीय उद्यान' कर दिया गया। इसे 2014 ई. में टाइगर रिजर्व बना दिया गया। यह कोरिया तथा सूरजपुर जिले में अव्यवस्थित है। यहाँ नीलगाय, बाघ, तेदुंआ आदि पाये जाते है।

अतिमहत्वपूर्ण जानकारी

छत्तीसगढ राज्य वन संसाधन की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य है। राज्य में 55621वर्ग किलोमीटर 44.21% वन है। भारत में छत्तीसगढ का स्थान तीसरा है।

इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान

इस राष्ट्रीय उद्यान से इंद्रावती नदी बहती है। जिस वजह से इसका नाम पडा है। इसकी स्थापना 1978 ई. में हुई थी। यह बीजापुर जिले में स्थित है। यह राज्य का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है इसका क्षेत्रफल 1258 वर्ग किमी है। इसे वर्ष 1983 में टाइगर रिजर्व घोशित किया गया था। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2009 में यहाँ टाइगर रिजर्व लागू किया गया जिसके बाद इसका क्षेत्रफल 2799 वर्ग किमी तक फैलाया गया।

अन्य जानकारियाँ

- छत्तीसगढ वन क्षेत्र की दृश्टि से देश में चौथा तथा वन आवरण की दृश्टि से तीसरा स्थान है।
- ISER 2017के अनुसार छत्तीसगढ क्षेत्रफल की दृश्टि से तीसरा सर्वधिक वनाच्छादित राज्य है।

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान

यह राज्य का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान है। यह 200 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसकी स्थापना वर्ष 1982 में हुई थी। कांगेर नदी की वजह से इस उद्यान का नाम पडा है। यहाँ पहाडी मैना को संरक्षित किया गया है। कांगेर नदी में भैसादरहा नामक स्थान पर मगरमच्छ प्राकृतिक निवास है।

अन्य जानकारियाँ

यहाँ उष्णकटिबंधीय षुश्क पर्णपाती वन पाये जाते है । राज्य में कुल 3 राष्ट्रीय उद्यान है तथा 11 अभ्यारण्य है। राज्य में कुल 4 टाइगर रिजर्व भी है। सन् 2017 में भोरमदेव को देष का 51 वाँ राज्य टाइगर रिजर्व बनाये जाने का प्रस्ताव दिया गया था परन्तु अप्रैल 2018 में राज्य सरकार अपने फैसले से पीछे हट गई। राज्य में सर्वाधिक वन नारायणपुर जिला तथा न्यूनतम वन बेमेतरा व दुर्ग में है।

अभ्यारण्य

प्रदेश में 11 अभ्यारण्य है।

1.	तमोर पिंगला	सूरजपुर	1978	608 वर्ग किमी
2.	सीतानदी	धमतरी	1974	559 वर्ग किमी
3.	अचानकमार	मुंगेली	1975	552 वर्ग किमी
4.	सेमरसोत	बलरामपुर	1978	430 वर्ग किमी
5.	गोमरदा (गोमडी)	रायगढ	1975	278 वर्ग किमी
6.	पामेड	बीजापुर	1983	265 वर्ग किमी
7.	बारनवापारा	बलौदाबाजार	1976	245 वर्ग किमी
8.	उदंती	गरियाबंद	1983	230 वर्ग किमी

9.	भोरमदेव	कवर्धा	2001	164 वर्ग किमी
10.	भैरमगढ	बीजपुर	1983	139 वर्ग किमी
11.	बादलवखोल	जषपुर	1975	105 वर्ग किमी

नोटः – उदंती – सीतानदी, तमोर पिंगला (गुरूघासीदास के साथ) वर्ष 2009 सेटाइगर रिजर्व बना दिया गया है। इस वजह से वर्तमान अभ्यारण्य की संख्या 8 है।

टाइगर रिजर्व

वर्तमान में प्रदेश में 4 टाइगर रिजर्व है। सन् 2009 में तीन टाइगर रिजर्व को मान्यता मिली।

- इंद्रावती, यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 1983से शुरू हुआ था।
- उदंती – सीतानदी, यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 2006 में हुआ था।
- अचानकमार, यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 2006में शुरू हुआ था।
- गरूघासीदास राज्य का नवीनतम तथा चौथा टाइगर रिजर्व है।
- गुरूघासीदास को तमोर पिंगला को मिला कर वर्ष 2014 में बनाया गया है।

बायोस्फीयर

राज्य में सिर्फ एक बायोस्फीयर है– अचानकमार, इसकी स्थापना वर्ष 2005 में की गई थी । यह देश का 14वाँ बायोस्फीयर है। इससे पहले 1985 में कांगेर घाटी को बायोस्फीयर बनाने की घोशणा की गई थी, लेकिन स्थापित ना हो सका ।

छत्तीसगढ में मिट्टी के प्रकार

लाल पीली मिट्टी (मटासी मिट्टी)

- विस्तार – सम्पूर्ण छत्तीसगढ
- निर्माण – गोंडवाना क्रम की चट्टानों के अपरदन से
- रंग – लाल (लोहे के ऑक्साइड के कारण), पीला (फेरिक ऑक्साइड के जल योजना)
- कमी –ह्यूमस, नाइट्रोजन
- pH मान –5ण्5 से 8ण्5 अम्लीय से क्षारीय
- फसल – उपयुक्त – चावल के लिए, अन्य – ज्वार, मक्का, तिल, अलसी, कोदो, कुटकी
- स्थानीय नाम – मटासी
- प्रतिशत –50 से 60%, जल धारण क्षमता कम होती है।

लाल रेतीली मिट्टी (बलुई मिट्टी)

- विस्तार – बस्तर संभाग
- राजनांद गांव (मोहला तहसील)
- कांकेर
- नारायणपुर
- बीजापुर
- कोंडा गाँव
- बस्तर
- दंतेवाडा

- सुकमा
- निर्माण – ग्रेनाइट व नीस चट्टानों के अपरदन से इसका निर्माण होता है ।
- कमी – नाइट्रोजन और ह्यूमस की कमी होती है ।
- अधिकता – लौह तत्व की अधिकता होती है।
- उपजाऊ– उर्वरकता की कमी होती है।
- फसल – उपयुक्त – कोदो, कुटकी
- अन्य – ज्वार, बाजरा, आलू, तिल
- विशेष –1प्रतिशत 30.30% यह अम्लीय प्रकृति की होती है।

लैटेराईट मिट्टी (मुरमी या भाठा)

- निर्माण– निक्षालन की प्रक्रिया से होता है।
- प्रधानता – लोहा, एल्युमिनियम के ऑक्साइड की अधिकता होती है।
- कमी – ह्यूमस, नाइट्रोजन पोटास, चूना
- उपयोग – सडक व भवन निर्माण में होता है।
- फसल – सिंचाई होने पर मोटे अनाज
- उर्वरकता – कम होती है।
- विस्तार – सरगुजा, जशपुर, तिल्दा (रायपुर), बेमेतरा
- pH मान –7 से अधिक है ये क्षारीय होती है।

काली मिट्टी (कन्हार मिट्टी)

- अन्य नाम – भर्री, कन्हार
- निर्माण – बेसाल्ट (दक्कन ट्रेप) के अपरदन से बनता है।
- विस्तार – मुंगेली, पंडरिया, राजनांद गाँव
- रंग – काला टिटेनिफेरस मैग्नेटाइट और जैव तत्व की उपस्थिति के कारण होता है।
- प्रधानता – लोहा, चूना, पोटास, एल्युमिनियम, कैल्षियम, मैग्नीषियम, कार्बोनेट, नाइट्रोजन, फास्फोरस, ह्यूमस
- अन्य – गेहूँ, चना, दाल, सोयाबीन, गन्ना, सब्जी, मूंगफली
- विशेष – पानी की कमी से सूखी और सूखने पर दरार पड जाती है।

लाल दोमट मिट्टी

इस मिट्टी में लौह तत्व की अधिकता के कारण इसका रंग लाल होता है। यह मिट्टी आर्कियन और ग्रेनाइट की बनी है। ये कम आर्द्रता ग्राही होने के कारण जल अभाव में कठोर हो जाता है। अतः इस मिट्टी में खेती के लिए अधिक जल की आवष्यकता होती है।

- इस मिट्टी में खरीफ मौसम में खेती अच्छी होती है, परंतु रबी मौसम में सिंचाई की व्यवस्था होने पर अच्छी खेती की जा सकती है।
- प्रदेश के 10 से 15 प्रतिशत भाग में इसका विस्तार है।
- मुख्य रूप से प्रदेश में बस्तर, दंतेवाडा, सुकमा, बीजापुर में ये मिट्टी पायी जाती है।

मिट्टी का स्थानीय नाम

- लाल पीली मिट्टी – मटासी
- लैटेराइट – भाठा या मुरमी
- काली मिट्टी – कन्हार
- काली व लाल मिट्टी का मिश्रण – डोरसा
- बस्तर के पठार में पायी जाने वाली मिट्टी – टिकरा मरहान, माल, गाभर
- उत्तरी क्षेत्र में पायी जाने वाली – गोदगहबर, बहरा
- नदियों की घाटी में पायी जाने वाली मिट्टी – कछारी
- कन्हार और मटासी के बीच की मिट्टी – डोरसा

छत्तीसगढ की प्रमुख नदियाँ

परिचयः– छत्तीसगढ राज्य देष के मध्य–पूर्व में स्थित है। भौगोलिक संरचना के अनुसार छत्तीसगढ राज्य को मुख्यतः चार नदी कछारों में बाँटा जा सकता है। जिसमें प्रदेश की नदियाँ सम्मिलित है।

1. महानदी प्रवाह प्रणाली
2. गोदावरी प्रवाह प्रणाली
3. गंगा नदी प्रवाह प्रणाली
4. नर्मदा नदी प्रवाह प्रणाली

महानदी प्रवाह प्रणाली

महानदी तथा इसकी सहायक नदियाँ पूरे छत्तीसगढ का 58.48 प्रतिशत जल समेट लेती है। छत्तीसगढ की गंगा के नाम से प्रसिद्ध महानदी धमतरी के निकट सिहावा पहाडी से निकलकर दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हुई बिलासपुर जिले को पार कर पष्चिम से पूर्व की ओर बहती है, तथा उडीसा राज्य से होती हुई बंगाल की खाडी में गिरती है। महानदी की कुल लंबाई 851 किमी है, जिसका 286 किमी छत्तीसगढ में है। प्रदेश में इसका प्रवाह क्षेत्र धमतरी, महासमुन्द्र, दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, जांजगीर चांपा, रायगढ एवं जशपुर जिले में है।

महानदी की प्रमुख सहायक नदियाँ

शिवनाथ नदी

इस नदी का उद्‌गम स्थल राजनांद गाँव जिले की अंबागढ तहसील की 624 मीटर ऊँची पानाबरस पहाडी में है। यह नदी उद्‌गम स्थल से 40 किमी की दूर तक उत्तर की ओर बहकर जिले की पूर्व सीमा की ओर बहते हुए षिवरीनारायण के निकट महानदी में विलीन हो जाती है। षिवनाथ नदी राजनांद गाँव जिले में 384 वर्ग किमी तथा दुर्ग जिले में 22484 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है। हाफ, आगर, मनियारी, अरपा, लीलगर, खरखरा, खारून, जमुनिया आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

हसदों नदी

यह मनेंद्रगढ तहसील में कोरिया पहाडी के निकट रामगढ से निकलती है। इसकी कुल लंम्बाई 209किमी है। चांपा में बहती हुई षिवरीनारायण से 8 मील की दूरी में महानदी में मिल जाती है। इसमें कटघोरा से लगभग 10.12 किमी पर प्रदेश की सबसे ऊँची तथा बडी मिनीमाता हसदों बागों नाम की बहुउद्देशीय परियोजना का निर्माण किया गया है।

तांदूला नदी

यह शिवनाथ की प्रमुख सहायक नदियाँ है जिसका जन्म स्थल कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर तहसील की पहाडी पर है।

खारून नदी

इस नदी की लंबाई 208किमी है। दुर्ग जिले के दक्षिण पूर्व से निकलकर 80 किमी उत्तर की ओर बहकर सिमगा के निकट सोमनाथ नामक स्थान पर षिवनाथ में मिल जाती है। यह नदी दुर्ग जिले में 19980 वर्ग किमी तथा रायपुर जिले में 2700 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है।

जोंक नदी

यह महासमुंद के पहाडी क्षेत्र से निकलकर रायपुर जिले के बिन्द्रानवागढ के निकट स्थित भाटीगढ पहाडी 493 मी. से निकलकर रायपुर जिले के दक्षिणी भाग में बहते हुए राजिम के निकट महानदी में मिलती है । रायपुर जिले में यह नदी 2480 वर्ग किमी. क्षेत्र का निर्माण करती है।

पैरी नदी

इस नदी की लंबाई 96 किमी है। रायपुर जिले में बिन्द्रानवागढ के निकट स्थित भाटीगढ पहाडी (493मी) से निकलकर रायपुर जिले के दक्षिणी भाग में बहते हुए राजिम के निकट महानदी में मिलती है। रायपुर जिले में यह नदी 3000 वर्ग किमी. का निर्माण करती है।

माण्ड नदी

यह नदी सरगुजा जिले की मैनपाट पठार के उत्तरी भाग में निकलती है। फिर रायगढ जिले के घरघोडा एवं रायगढ तहसील में बहती हुई जांजगीर – चांपा की पूर्वी भाग में स्थित चन्द्रपुर के निकट महानदी में मिल जाती है। कुरकुट और कोइराज इसकी सहायक नदियाँ है। इसका प्रवाह क्षेत्र वनाच्छित एवं बालुका प्रस्तरयुक्त है। रायगढ जिले में यह नदी 14 किमी की दूरी तय करती है जहाँ यह 3233वर्ग किमी तथा सरगुजा जिले में 800 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है।

ईब नदी

इसका उद्गम जषपुर जिले के पाण्डरापाट नामक स्थान पर खुरजा पहाडियों से हुआ है। छत्तीसगढ में इसकी कुल लंबाई 87किमी है। यह महानदी की प्रमुख सहायक नदी है। ढाल के अनुरूप उत्तर से दक्षिण की ओर जषपुर जिले में बहते हुए उडीसा राज्य में प्रवेष कर हीराकुंड नामक स्थान से 10 किमी पूर्व महानदी में मिलती है। मैना, डोंकी इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है। इसका अपवाह क्षेत्र सरगुजा के 250 वर्ग किमी तथा रायगढ जिले के 3546वर्ग किमी में है।

केलो नदी

इसका उद्गम रायगढ जिले की घरघोडा तहसील में स्थित लुडेग पहाडी में हुआ है। घरघोडा एवं रायगढ तहसीलों में उत्तर से दक्षिण की ओर बहते हुए उडीसा राज्य के महादेव पाली नामक स्थान पर महानदी में विलीन हो जाती है।

दूध नदी

इसका उद्गम कांकेर से लगभग 15 किमी की दूरी पर स्थित मलाजकुण्डम पहाडी से हुआ है जो पूर्व की ओर बहते हुए महानदी में मिलती है।

बोराई नदी

इस नदी का उद्गम स्थल कोरबा के पठार से हुआ है। यह नदी आगे उद्गम स्थल से दक्षिण दिषा में बहती हुई महानदी में विलीन हो जाती है। षिवनाथ प्रमुख सहायक नदी है।

गोदावरी प्रवाह प्रणाली

गोदावरी महाराष्ट्र प्रदेश के नासिक जिले के त्रयम्बक नामक 1067 मीटर ऊँचे स्थान से निकलकर छत्तीसगढ की दक्षिणी सीमा बनाती हुई बहती है। 'दक्षिण की गंगा' नाम से विख्यात यह नदी प्रदेश के बस्तर जिले 4240 वर्ग किमी तथा राजनांद गाँव जिले में 2558 वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र बनाती है तथा लगभग 40 किमी लंबी दूरी में बहती है। इंद्रावती, शबरी, चिंता, कोटरी, बाघ, नारंगी, मरी, कोभरा, डंकनी और शंखनी आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

गोदावरी की प्रमुख सहायक नदियाँ

इंद्रावती नदी

यह गोदावरी की प्रधान सहायक तथा बस्तर जिले की सबसे बडी नदी है। इसका उद्गम उडीसा राज्य के कालाहांडी पठार से हुआ है। प्रदेश के बस्तर जिले में लगभग 370किमी की दूरी तय करते हुए पूर्व से पष्चिम दिषा में बहते हुए यह गोदावरी में विलीन हो जाती है। यह नदी जगदलपुर से लगभग 35 किमी दूर पष्चिम में चित्रकोट जल–प्रताप की रचना करती है।

कोटरी नदी

यह नदी दुर्ग जिले की उच्च भूमि से निकलकर कांकेर जिले में इंद्रावती नदी में मिल जाती है। इसका सर्वाधिक अपवाह क्षेत्र राजनांद गाँव जिले में है।

शबरी नदी

इसका उद्‌गम दंतेवाडा के निकट बैलाडीला पहाडी है जो बस्तर की दक्षिणी पूर्वी सीमा में बहती हुई आंध्र प्रदेश के कुनावरम् के निकट गोदवरी में मिल जाती है। बस्तर जिले में यह 150किमी लंबाई में बहती है। जिससे 5680 किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है।

डंकिनी और षंखिनी नदी

ये दोनों इंद्रावती की प्रमुख सहायक नदियाँ है। डंकिनी नदी का उद्‌गम डांगरी–डोंगरी तथा षंखिनी नदी का उद्‌गम बैलाडीला पहाडी से हुआ है। दंतेवाडा में ये दोनों नदियाँ आपस में मिल जाती है।

बाघ नदी

इस नदी का उद्‌गम राजवांद गाँव जिले में स्थित पठार से हुआ है। यह नदी छत्तीसगढ और महाराश्ट्र राज्यों के बीच की सीमा बनाती है।

नारंगी नदी

यह बस्तर जिले की कोंडागांव तहसील से निकलती है, तथा चित्रकूट प्रताप के निकट इंद्रावती में विलीन हो जाती है।

गंगा नदी प्रवाह प्रवाली

प्रदेश के लगभग 15% गंगा अपवाह तंत्र का विस्तार है। इस प्रवाह क्षेत्र के अंतर्गत बिलासपुर जिले के 5ःभाग रायगढ जिले का 14% भाग तथासरगुजा जिले का 8% भाग आता है। प्रदेश में सोन इसकी प्रमुख नदी है जो पेन्ड्रा रोड तहसील के बंजारी पहाडी क्षेत्र से निकलकर पूर्व से पष्चिम की ओर बहती है और मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश को पार करते हुई गंगा नदी में मिल जाती है। कन्हार, रिहन्द, गोपद, बनास, बीजाल इसकी अन्य सहायक नदियाँ है।

प्रमुख सहायक नदियाँ

कन्हार नदी

यही नदी बिलासपुर जिले के उत्तरी पष्चिमी भाग में स्थित खुडिया पठार के बखोना नाम पहाडी से निकली है। इसका उद्‌गम स्थल 1012 मीटर ऊँचा है। यहाँ से उत्तर की ओर बहती हुई सामरी तहसील में 60 मीटर ऊँचे कोहरी जलप्रपात की रचना करती है। इसके पष्चात् षहडोल एवं सतना जिले की सीमा पर सोन नदी में मिल जाती है। यह नदी सरगुजा जिले में 3030वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती है। सिंदूर गलफूजा, दातरम, पेंगन आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

रिहन्द नदी

यह नदी सरगुजा जिले के मैनपाठ के निकट 1088 मीटर ऊँची मातरिंगा पहाडी से निकलती है। अपनी उद्‌गम स्थल से उत्तर की ओर बहती हुई यह सरगुजा बेसीन की रचना करती है। इसी कारण उसे सरगुजा जिले की जीवन रेखा कहा जाता है। यह अपवाह क्रम की सबसे बडी (145 किमी) नदी है। इस पर मिर्जापुर क्षेत्र में रिहन्द नामक बांध बनाया गया है। रिहन्द बेसिन में बहने के पष्चात् अन्ततः उत्तरप्रदेश में सोन नदी में विलीन हो जाती है। घुनघुटा, मोरनी, महान, सूर्या, गोबरी आदि इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।